भास के नाटक

दूत घटोत्कच

संस्कृत मूल : महाकवि भास
भाषान्तर : भारतरत्न भार्गव

(शंख आदि मंगल वाद्यों के साथ कथा गायक प्रवेश करते हैं।)

मंगलाचरण : वे नारायण तीन लोक के प्राण तत्व के रक्षक,
देव विजय के वही नियंता नाट्य–कला अन्वेषक।
नाट्य तंत्र के सूत्रधार भी हैं अनन्य प्रस्तावक,
वही समापन कर्ता भी हैं, वे ही सृष्टि विधायक।
मंगल हो सुनने वालों का, आनन्दित हों प्रेक्षक,
उनके श्री चरणों का वन्दन, जो सबके हित साधक।

(वे सभी जाते हैं। दो प्रतिहारियों का विभिन्न दिशाओं से प्रवेश! मिश्रित और विडम्बना पूर्ण संगीत।)

प्रतिहारी : आर्य कंचुकी !

कंचुकी : बोलो प्रतिहारी।

प्रतिहारी : कैसा संकट हुआ उपस्थित, संशय का क्षण।

कंचुकी : पक्ष भयंकर क्रुद्ध, युद्ध अब होगा भीषण।

प्रतिहारी : महा समर के बीच कृष्ण के साथ धनुर्धर
दक्षिण प्रदेश क्यों गए ?

कंचुकी : यही चाल थी कौरव दल की।
संशप्तक की सेना को भड़काया फिर किया आक्रमण,
उत्तेजित भी किया द्रोह के लिए !

अर्जुन हुए विवश शमन करने को
और कृष्ण भी साथ गए।

प्रतिहारी : ओह, तभी कौरव नरेश ने
चक्रव्यूह की रचना के लिए
किया बाध्य आचार्य द्रोण को !

कंचुकी : चक्रव्यूह का भेदन–कौशल
किसी अन्य को ज्ञात नहीं था
अभिमन्यु था समर्थ केवल
सुना पिता अर्जुन से उसने
यह रहस्य जन्म से पहले
माता के गर्भ में रह कर
किन्तु उपाय नहीं जानता था बाहर आने का।
क्योंकि निद्रालस थी माता
और नहीं सुन पाया
शत्रु पर विजय प्राप्त करने की युक्ति।

प्रतिहारी : ओह, तभी घिरा वह कौरव दल के योद्धाओं से !
और फिर मारा गया निहत्था !
आर्य कंचुकी, क्या यह युद्ध नीति का नहीं उल्लंघन !

कंचुकी : अनुचित है यह !
किन्तु वत्स,
भीष्म पितामह के वध से थे क्षुब्ध सभी कौरव जन !
कहा युधिष्ठिर ने जब 'अश्वत्थामा हतः नरोवाकुंजरोवा'
तब क्या उसको उचित कहेंगे ?

प्रतिहारी : नहीं, नहीं ! निश्चय ही वह युद्ध नीति के था विरूद्ध।

कंचुकी : युद्ध नीति या मर्यादा का लंघन
सह न सके कौरव कुल दीपक महाराज धृतराष्ट्र !

प्रतिहारी : बहुत भयातुर हैं उनका अन्तर्मन,
बहुत भयंकर संकट का क्षण !

कंचुकी : युद्ध सदा नाश करता है
किन्तु काल का यह परिवर्तन चक्र
निरन्तर घूम रहा है,
इसी मरण से लेता जन्म सृष्टि का जीवन !
यही नियम है।

(दृश्य–परिवर्तन)

(धृतराष्ट्र और गांधारी व दुःशला का प्रवेश।)

धृतराष्ट्र : **(दुखी स्वर में)**
सुन रहा ये शब्द कैसे ?
किसका है यह कथन
किसके मुख से निकल रहे ये कटु वचन ?
कौन करता घोषणा अभिमन्यु वध की,
घोषणा है यह हमारे वंश के विनाश की।

गांधारी : महाराज, सच है।
दोनों कुल का विग्रह केवल
सारे पुत्रों के विनाश का हेतु बनेगा।

धृतराष्ट्र : मुझको भी लगता है ऐसा।

गांधारी : अब क्या होगा ?

धृतराष्ट्र : सुनो गांधारी !
जो सुदर्शन चक्रधारी हैं स्वयं
किन्तु स्वेच्छा से बने हैं पार्थ सारथी
और वह गांडीवधारी इन्द्र सुत अर्जुन
जो कुपित अभिमन्यु वध से
ध्वंस कर देंगे समूचे लोक का।

गांधारी : हाय, वत्स अभिमन्यु !
दुर्भाग्य से कुल का हुआ विग्रह
और नर संहार !

दुःशला : महाराज, कैसा यह कुचक्र ?
जिसने वधु उत्तरा को वैधव्य दिया है,
आदेश दिया है उसने अपनी पत्नी को भी विधवा होने का !

धृतराष्ट्र : पुत्री, किसने यह संदेश सुनाया ?

जयत्रात : मैंने महाराज !

धृतराष्ट्र : कौन हो तुम ?

जयत्रात : महाराज, मैं हूँ जयत्रात।

धृतराष्ट्र : मुझे बताओ,
कौन है अभिमन्यु हन्ता ?
कौन प्रस्तुत मरण वरण को ?
पांडव रूपी पंचाग्नि में कौन चाहता बनना ईंधन ?

जयत्रात : महाराज, कहा जाता यह
मिलकर अनेक योद्धाओं ने
किया वध अभिमन्यु का,
किन्तु निमित्त बने संभवतः जयद्रथ उसके।

धृतराष्ट्र : ओह ! क्या निमित्त हुआ जयद्रथ।
मेरी इकलौती पुत्री का पति !

जयत्रात : जी महाराज !

धृतराष्ट्र : ओह, तब तो जयद्रथ बनेगा काल का ग्रास निश्चित !

(दुःशला का रूदन)

धृतराष्ट्र : कौन रो रही है ?

जयत्रात : महाराज, आपकी पुत्री, दुःशला !

धृतराष्ट्र : पुत्री, मत रो !
सौभाग्य तुम्हारा रूचिकर नहीं, तुम्हारे पति को !
इसलिए स्वयं को
अर्जुन के बाणों का लक्ष्य बनाया
कैसा यह दुर्भाग्य ?

दुःशला : तात, मुझे अनुमति दें
मैं जाऊंगी पास उत्तरा के !

धृतराष्ट्र : क्या कहोगी ?

दुःशला : कहूँगी उससे,
तुमने वेष धरा विधवा का
मैं भी शीघ्र करूँगी धारण यही वेष अब !

गांधारी : नहीं, पुत्री नहीं !
मत कहो ऐसे अमंगल शब्द
तुम्हारा पति है जीवित।

दुःशला : यह सौभाग्य कहाँ है मेरा ?
अर्जुन और कृष्ण का जिस पर कोप भयंकर
कब तक रह पाएगा जीवित ?

धृतराष्ट्र : सत्य कथन है !
कृष्ण गोद में पला–बढ़ा जो
हलधर का अत्यन्त प्रीतिकर
देव तुल्य प्रबल बलशाली
पांडव जन का स्नेह पात्र था
वह अभिमन्यु,
उसका हन्ता पाप कर्म के कारण
कब तक जीवित रह पाएगा ?
(गान्धारी से) देवी गांधारी !

गांधारी : आज्ञा महाराज !

धृतराष्ट्र : आओ, हम चलें वहाँ
प्रिय अभिमन्यु का शव है रखा जहाँ !

गांधारी : भावना अनुकूल है यह बात,
किन्तु निवेदन मेरा !

धृतराष्ट्र : बोलो गांधारी !

गांधारी : यदि कृष्ण और अर्जुन के जाने के बाद
आप वहाँ पहुँचे तो संभवतः यह उचित रहेगा।

धृतराष्ट्र : कथन तुम्हारा युक्तिसंगत है।
आओ, तब तक करें प्रतीक्षा।
क्यों न चलें हम गंगा तट की ओर।

गांधारी : वहाँ स्नान करेंगे।

धृतराष्ट्र : अपने ही कुकृत्य के कारण
जितने पाप किए संचित अपने पुत्रों ने,
उनको आज जलांजलि दूँगा, गंगाजल से !

गांधारी : क्या प्रभाव पड़ेगा इसका महा समर में ?

धृतराष्ट्र : नहीं, नहीं। संभव अब लगता नहीं।
नए सृजन के लिए विनाश का रूप भयंकर
देख रहे हम !
नियति का यह निश्चित क्रम।

(दृश्य–परिवर्तन)

(दुर्योधन के शिविर में दुःशासन, शकुनी, कर्ण तथा अन्य योद्धा अभिमन्यु वध पर विजय का हर्ष और उल्लास मना रहे हैं। विजय सूचक संगीत एवं वाद्य)

दुर्योधन : खंडित दर्प किया रिपुदल का
अहंकार को नष्ट किया।
मदोन्मत्त अभिमन्यु निधन ने
इस विरोध को पुष्ट किया।

अनेक स्वर : जय कौरव दल, जय दुर्योधन !

दुर्योधन : केशव गिनते सेना के शव,
अर्जुन निबल हताश हुआ।
कौरव दल के प्रबल तेज से,
शत्रु पक्ष का नाश हुआ।

अनेक स्वर : जय कौरव दल, जय कौरव दल।

(कुछ योद्धा मदोन्मत्त होकर नाचने लगते हैं।)

दुर्योधन : किया पराजित शत्रु पक्ष को
मैं महान सम्राट हुआ।

अनेक स्वर : जय दुर्योधन, जय सम्राट।

(कुछ योद्धा और उन्मत्त होकर नाचते हैं।)

दुःशासन : जयद्रथ ने अपना रण कौशल,
चक्रव्यूह में दिखलाया।
भीष्म पितामह वध का बदला,
कुटिल नीति से ले पाया।
शत–शत शर से मार गिराया,
हृदय शोक संतप्त किया।
जय दुर्योधन, जय कौरव दल।

अनेक स्वर : जय कौरव दल, जय कौरव दल।

शकुनी : जयद्रथ का वह प्रबल पराक्रम
उन्हें कल्पनातीत लगा।

नष्ट हुआ पांडव कुल गौरव
यश पर भी संघात लगा।

अनेक स्वर : जय कौरव दल, जय महाराज !
जय कौरव दल, जय महाराज !

सभी योद्धा : **(मस्ती भरे स्वरों में)**
कौरव सैन्य शिविर में उत्सव
जैसा वातावरण बना।
सब प्रसन्न हैं, आनन्दित हैं
मन में उपजा हर्ष घना।
जय जय जयद्रथ, जय महाराज।
जय जय जयद्रथ, जय महाराज।
(मस्त होकर नाचते हैं)

दुर्योधन : विजय हमारी हुई आज के रण में
होंगे तात बहुत प्रसन्न यह सुन कर।
आओ, हम सब उन्हें प्रणाम कर आएं।

शकुनी : वत्स दुर्योधन, ऐसा नहीं कि वे होंगे प्रसन्न।
कुल का यह विद्रोह तनिक भी नहीं सुहाता उनको,
पांडव जन उनको अति प्रिय हैं
वे हम सबके गहरे निंदक
अतः उचित है महासमर में
अन्तिम विजय प्राप्त करने तक करें प्रतीक्षा।
युद्ध से निवृत्त होकर
अभिवादन के लिए हमारा जाना होगा श्रेयस्कर !

दुर्योधन : मातुल, ऐसा उचित न होगा।

है कर्त्तव्य हमारा,

हमें तात के अभिवादन को जाना होगा।

शकुनी तथा दुःशासन : चलो, उचित है।

(सब जाते हैं) **(क्रमशः)**